gekj Ldy e d{kk 0;oLFkk ugh gA

आज की मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था में यदि हम किसी भी स्कूल में कक्षा अध्ययन की दृष्टि से नजर डालें तो हम पाएंगें कि यह व्यवस्था एक कक्षा के बच्चों को अन्य कक्षाओं के बच्चों से एवं अध्यापकों से अलग करती है, एक ही कक्षा में होने के कारण बच्चों का परिचय क्षेत्र केवल अपनी आयु तक ही सीमित होकर रह जाता है। अतः यह व्यवस्था उनके मैत्री संबंधों पर प्रभाव डालती है, जिसका परिणाम यह होता है कि बच्चे अपने से बड़े उम्र के बच्चों के साथ मित्रता करने से झिझकते है, और अपने से नीचे क्लास के बच्चे उन्हें बहुत ही छोटे दिखाई देते है। इसी से अलग यदि हम इन बच्चों को उनके पारिवारिक माहौल में देखे तो हम पाएंगे कि मित्रता करते समय इन बच्चों पर आयु की भिन्नता का कोई असर नहीं पड़ता, खासतौर पर खेलते वक्त ये बच्चे आयु की भिन्नता को कोई महत्व नहीं देते है।

इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए "उदय सामुदायिक पाठशाला" में कक्षा व्यवस्था को नहीं अपनाया गया है। हमारे यहाँ एक ही शिक्षक के पास कक्षा एक से पाँच तक के बच्चे

पढ़ते हुए मिल जाएंगे, क्योंकि हमारा मानना है कि हर बच्चे की सीखने की क्षमता अलग–अलग होती है।

उदाहरणस्वरूप :– यदि कोई बच्चा गणित में कक्षा चार की पढ़ाई पढ़ता है, तो वहीं बच्चा विज्ञान में कक्षा दो या तीन की पढ़ाई भी पढ़ सकता है इस तरह बच्चों में बड़े छोटे का कोई भेद नहीं रह जाता और साथ ही आयु की भिन्नता भी कोई दुष्प्रभाव नहीं डाल पाती है। साथ ही हमारा यह भी मानना है कि छोटे बच्चों का बड़े बच्चों के साथ परिचय एवं कार्य करने का अनुभव आवश्यक है। हमारी व्यवस्था के अन्तर्गत बच्चों को अपने से बड़े एवं छोटे बच्चों के साथ मित्रता करने में कोई भी कठिनाई नहीं होती है।

बच्चों के लिए अमूमन कक्षा व्यवस्था में एक और चीज यह देखने को मिलती है, कि कक्षा का एक निश्चित ढांचा होता है, जिसके अन्तर्गत बच्चों के लिए डेस्क एवं कुर्सियाँ और शिक्षको के लिए ऊँची कुर्सी एवं मेज होती है, कक्षा की एक दीवार पर ब्लैक बोर्ड होता है जिस पर सिर्फ शिक्षक ही कार्य कर सकता है, इस व्यवस्था के अन्तर्गत बच्चे एक निश्चित पंक्ति में बैठते है, और यदि उन्हें अपनी कुर्सी छोड़ कर कहीं और बैठना हो तो इसके लिए शिक्षक की आज्ञा लेनी पड़ती है।

इस तरह पंक्ति में बैठना बच्चों के लिए एक कठोर नियम सा बन चुका है।

जबकि हमारा मानना है कि ज्यादातर बच्चे स्वयं ही व्यवस्था पसंद होते है किन्तु कक्षा की व्यवस्था उनके द्वारा स्थापित होनी चाहिए। बच्चों को सदैव एक सी रहने वाली आरोपित व्यवस्था के अन्दर रहना पसंद नहीं होता इससे वे पढ़ाई में रूचि तो नहीं ही लेते है साथ ही इससे भागते भी है।

उदाहरणस्वरूप :–बच्चों को गणित एवं विज्ञान के विषय के लिए अलग–अलग बैठना पसंद होता है, इन विषयों के लिए जहाँ हर बच्चा अलग कोशिश करना चाहता है वहीं भाषा की पढाई वे एक घेरे में बैठकर करना ज्यादा पंसद करते हैं।

gekj Ldy e d{kk 0;oLFkk ugh gA